



नगर (भरतपुर)। शिवदर्शन प्रदर्शनी कार्यक्रम में सांसद रतनसिंह, पशुधन विकास बोर्ड के अध्यक्ष ब्रजेन्द्र सिंह, विधायक अनिता सिंह, ब्र.कु.हीरा व नगरपालिका अध्यक्ष रमनलाल सैनी।



दिल्ली (मजलिस पार्क)। मुख्य संसदीय सचिव व विधायक जयवीर जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सरला व ब्र.कु.राजकुमारी।

परमात्म शक्ति ...

हुए कहा कि रशिया में भारतीयता से भरपूर आध्यात्मिकता के संस्कारों से सम्पन्न बड़ी संख्या में राजयोगी भाई-बहनें सर्व में रूहानियत भरने की सेवा कर रहे हैं।

ब्र.कु. सीताराम मीणा ने कहा कि इस ज्ञान से मुझे प्रशासनिक कार्यों में भी सार्थक निर्णय लेने में बहुत मदद मिलती है। मैं नियमित रूप से इस संस्था की धारणाओं को अपनाकर सहज ही जीवन में आगे बढ़ रहा हूँ।

नौ दिवसीय महोत्सव में ब्रह्माकुमारीज महिला वर्ग द्वारा आयोजित सम्मेलन में महिलाओं की भागीदारी अभूतपूर्व रही। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए डॉ. सरोजनी अग्रवाल, एम.एल.सी. ने कहा कि विश्व में नारियों को सच्ची शिव शक्ति बनाने का कार्य यह संस्था कर रही है। आने वाला भविष्य मातृत्व शक्ति का ही है। सहज राजयोग एक सहज विधि है जिससे आध्यात्मिक व दैवीय शक्तियों से सम्पन्न बना जा सकता है।

माउण्टआबू से पधारी ब्र.कु.गीता ने कहा कि परमात्म-ज्ञान वह शक्ति है जिससे नारी को देवी के रूप स्थापित किया जा सकता है।

महिला सम्मेलन में मुख्य वक्ता ब्र.कु. मंजू ने कहा कि आज नारी अपनी काबिलियत से हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर रहकर कार्य कर रही है। नारी का उद्धार करने वाला कोई मनुष्य नहीं बल्कि स्वयं परमात्मा है। आध्यात्मिक नारी स्वपरिवर्तन द्वारा विश्व को ही नहीं बल्कि प्रकृति को भी परिवर्तित करने की शक्ति रखती है। बस स्वयं को पहचानने की आवश्यकता है।

व्यापारी वर्ग के लिए 'तनाव कैसे घटे, व्यापार कैसे बढ़े' विषय पर सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें विधायक सत्यप्रकाश अग्रवाल ने कहा कि राजयोग व्यापारियों को लोभ से हटकर लाभ की ओर ले जाने में मदद करेगा।

शिक्षा वर्ग के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति हरिशंकर गौड़ ने कहा कि मैं कौन हूँ इसे अध्यात्म द्वारा ही समझा जा सकता है। विज्ञान तब तक अधूरा है जब तक अध्यात्म को उसके साथ न जोड़ा जाए।

प्रशासक वर्ग के लिए आयोजित कार्यक्रम में 'समय की पुकार हिंसा मुक्त समाज' विषय पर अपने विचार रखते हुए कमिश्नर मृत्युंजय कुमार नारायण ने कहा कि शारीरिक हिंसा से भी अधिक मानसिक हिंसा का प्रभाव जीवन पर पड़ता है।

ईश्वरीय ...

ब्र.कु. गीता ने कहा कि यदि हममें सहन करने व समाने का गुण नहीं है तो वह संगठन में सफल नहीं हो सकता, न ही वह संगठन को एकता के सूत्र में बांध सकता। परिवार में भी हम दूसरों के अवगुणों को, उनकी बातों को, उनके स्वभाव-संस्कार को समाकर चलें। तब ही हम उन्हें स्नेह दे पायेंगे। यदि हम नहीं समाते तो दूसरों के लिए हमारे अंदर भिन्न-भिन्न भावनाएँ रहती हैं, फिर तदानुसार ही व्यवहार भी होता है और इससे वातावरण में अलौकिकता नहीं रहती।

प्रोत्साहन ...

के वातावरण को सुखमय बनाने में बहुत बड़ा सहयोग है। शिव प्रसाद शर्मा जी, ए.डी.सी.ने कहा कि मुझे जब यहां आने का निमंत्रण मिला तो सोचा था कि थोड़ी देर हाजिरी लगाकर वापिस आ जाऊंगा। लेकिन जब मैंने स्वामीनाथन जी को सुना तो उठ नहीं सका। मैं इस संस्था के किसी समारोह में पहली बार उपस्थित हुआ हूँ और अब अनुभव कर रहा हूँ कि जीवन को मूल्यवान बनाने की जो शिक्षा यहां दी जा रही है उससे अवश्य ही मानव जीवन में महानता लाई जा सकती है।

मनोज सिवाच, रजिस्ट्रार ने कहा कि जीवन के लिए महत्वपूर्ण बातों की अहमियत को बहुत ही सरल एवं स्पष्ट ढंग से हमारे सामने रखा है। आज मनुष्य चाह कर भी खुश नहीं रह पाता और उसे हंसी की ताकत का एहसास भी नहीं है। जीवन शैली को बेहतरीन बनाने का जो तरीका स्वामीनाथन भाई ने बताया है वो सचमुच सराहनीय है।

आर.के. सैनी जी, डिप्टी एक्साईस एण्ड टैक्सेशन कमिश्नर ने कहा कि जो कुछ भी सुना है, उसका अनुसरण करके मैं अपने जीवन में परिवर्तन लाना चाहता हूँ। मैं इस संस्था के भाई-बहनों की पवित्र जीवन शैली और सरल व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ हूँ, यहां का वातावरण मुझे बहुत आकर्षित करता है। इस आयोजन के लिए मैं संस्था का बहुत आभारी हूँ।

अमरजीत सिंह जी, एस.डी.एम. ने कहा आज जीवन की रफ्तार बहुत तेज है, लेकिन इस रफ्तार में व्यक्ति अपने जीवन रूपी गाड़ी पर नियंत्रण खो बैठा है। ऐसे समय में आध्यात्मिकता ही एकमात्र ऐसी शक्ति है, जिससे अपने जीवन को संतुलित किया जा सकता है।

सन्त लाल पचारजी आर.टी.ए. सेक्रेटरी ने कहा कि मैं इस शिविर में भाग लेने वालों से अनुरोध करता हूँ कि शिविर के दौरान अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए दिए जा रहे प्रशिक्षण को व्यवहारिक रूप अवश्य दें। मैं स्वयं भी यहां आकर एक अदभुत खुशी का अनुभव कर रहा हूँ।

डॉ. शमीम शर्मा एम.डी. ने कहा कि हम अपने समाज एवं परिवार के प्रति अपनी मानवीय जिम्मेदारियों को समझें और समाज सेवा के लिए अपने बच्चों को अवश्य प्रेरित करें। हर महिला आध्यात्मिकता से स्वयं को इतना सशक्त बनाए कि उसे अपनी सुरक्षा के लिए कहीं और नज़र न दौड़नी पड़े।

सतीश कुमार जी सिटी मजिस्ट्रेट ने कहा कि मैं ब्रह्माकुमारीज संस्था में पहली बार आया हूँ। मुझे यहां आकर अपने भीतर एक ऊर्जा का एहसास हो रहा है। मेरा मानना है कि व्यक्ति जब भी समाज सेवा का कोई महान कार्य करता है तो उसे आन्तरिक खुशी और दिव्य ऊर्जा का अनुभव होता है।



शमसाबाद। धानाध्यक्ष नितिन कंसाना को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.लक्ष्मी।

कर्म करते बुद्धि अलिप्त रहे

सबसे पहले अधिष्ठान, कर्त्ता, कारण और इच्छाएं। अधिष्ठान अर्थात् क्षेत्र, शरीर, स्थान (जहां है)। कर्त्ता वह है, जिसके द्वारा मन से प्रेरित होकर के कार्य करने वाली आत्मा। कारण यानि जो भिन्न-भिन्न इंद्रियां हैं जो साधन बन जाती है, कारण के लिए। इच्छाएं, जो प्रकृतिजन्य प्रवृत्ति हैं, सतो, रजो, तमो। इन प्रकृतिजन्य प्रवृत्ति में हम लिप्त होते हैं, इच्छा के वश और यानि ईश्वरीय नियम, प्रालम्ब या संस्कार। ये पांच चीजें हर कर्म के प्रति लगती हैं चाहे वो मन, वाणी, कर्म। कोई भी व्यक्ति चाहे नीति सम्मत करे या नीति विरुद्ध करे। ये पांच बातें इस विधि में आ जाती हैं।

असंस्कारी बुद्धि वाला अपने को ही कर्त्ता समझता है। 'मैं' के अभिमान में आ जाता है। वह दुर्गति को पाता है। लेकिन जो अहंकार भाव से ऊपर उठता और बुद्धि अलिप्त है, वो बंधनमुक्त हो जाता है। वह ईश्वरीय नियम में चलता हुआ कर्त्तव्य ही करता है। इसलिए परमात्मा ने अर्जुन को यही बताया कि जो असंस्कारी व्यक्ति होते हैं, वो अपने को ही कर्त्ता समझते हुए, अहंकार भाव में आ जाते हैं। इसमें भी तीन अवस्थाएँ हैं।

एक है देहभान, दूसरा है अभिमान और तीसरा है अहंकार। ये तीन स्टेजेज हैं। अहंकार सबसे बुरा है। क्योंकि वो अनेक आत्माओं को बहुत दुःख पहुंचाने वाला है। अभिमान उससे थोड़ा कम है। अभिमान माना क्या? अभिमान दो शब्द से बना है। अभि-मान अर्थात् कोई भी इंसान जब भी छोटा-मोटा कर्म करता है तो उसके मन के अंदर तुरंत ये भाव आ जाता है कि अभी-अभी मुझे मान मिलना चाहिए। जहां ये मान प्राप्त करने की इच्छा आ गयी ये है अभिमान। उसमें भले वो दूसरे को दुःख न भी देता हो, लेकिन अपने अभिमान की पुष्टि जरूर करता है। अभिमान माना अभी-अभी मान चाहिए। जहां उसको मान मिल जाता है वहां वो खुश हो जाता है। आत्म-तृप्ति का अनुभव करता है। उस भान में आकर के वो कोई भी कार्य करने के लिए तैयार हो जाता है।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा



एक छोटा बच्चा भी आज की दुनिया के अंदर अभिमान की वृत्ति को रखता है। अगर वह घर में है और मान लो कि उसका पिता शाम को घर में आता है। तो उस वक्त उसकी माँ उसको कहती है बेटा, जा एक गिलास पानी लेकर आओ पिताजी के लिए। वो दौड़कर के जाता है एक गिलास पानी भरकर ले आता है। और जब वो अपने पिता को पानी देता है और मान लो कि उसी वक्त पिता ने उसको कह दिया शाबाश बेटे! थैंक्यू। बस इतना कहा तो उस बच्चे का अभिमान भी सन्तुष्ट हो जाता है। दूसरे दिन शाम को उसका पिता आता है तो माँ को कहना नहीं पड़ता है, वो तुरंत भागता है और उस मान की इच्छा को लेकर कि आज भी मुझे थैंक्यू मिलेगा और पानी का गिलास लेकर के पहुंच जाता है। लेकिन मान लो कि पिता अपनी टेंशन में है और उसने बेटे को थैंक्यू नहीं कहा। शाबाश बेटा नहीं कहा। दूसरे दिन जब वो पिता शाम को आता है और माँ उस बच्चे को कहती है बेटा पानी लेकर आओ तो क्या कहेगा? मैं बिजी हूँ, आप ही लेकर जाओ। दूसरे दिन वो पानी का गिलास लेने को दौड़ेगा नहीं, क्योंकि उसके मान की पूर्ति नहीं हुई। बच्चा समझने लगता है कि जैसे कोई हमें चाकलेट देता है और हमसे तो बार-बार बुलवाते हैं, थैंक्यू करो बेटा, थैंक्यू करो। लेकिन जब वो बच्चा थैंक्यू सुनने की भावना से पानी का गिलास लेकर के गया और उसको किसी ने थैंक्यू बेटा नहीं कहा। तो दूसरे दिन उसको चाँकलेट देकर के दस बार कहे कि थैंक्यू कहे बेटा, थैंक्यू कहे, तो बिल्कुल नहीं बोलेगा। क्योंकि उसने जब कोई कर्म किया, आपकी सेवा में, तो आपने तो उसे थैंक्यू कहा ही नहीं। तो उसे यह महसूस होता है। कितना उसका कैचिंग पावर है कि जब मैंने दिया तो थैंक्यू नहीं मिला और जब मुझे दे रहे हैं तो हर बार मुझे थैंक्यू करने का, क्यों कहते हैं? वह नहीं बोलता है और दस बार माँ के बोलने पर भी वो बच्चा नहीं बोलता है। तो क्या कहती है माँ? आजकल ये जिद्दी हो गया है। नहीं तो इतना अच्छा थैंक्यू बोलता है, लेकिन आज नहीं बोला। एक बच्चे को भी अपने अभिमान की आज के युग के अंदर (कलियुग के अंदर) पुष्टि कराना चाहता है। इसी तरह से जब वो कोई भी कार्य करता है। उसको थैंक्यू कह दो, तो देखो वो दूसरे दिन फटाफट उसको, चाहे आये या न आये करेगा और वह आपको मदद करने के लिए पहुंच जायेगा।